# ऐसा भी होता है...

सुधा ओम ढींगरा

आदरणीय बाऊ जी एवं बीजी,

सादर प्रणाम!

बाऊ जी का लिखा मार्च १९९२ का पत्र फरवरी १९९३ में मुझे मिला. यहां का पता लिखते समय शहर के ज़िप कोड का एक नंबर बाऊ जी से ग़लत लिखा गया. पत्र घूमते-घामते ग्यारह महिने बाद मुझे मिला. चिट्ठी को पढ़ने के बाद पिछले महिनों के घटनाक्रम को समझ पायी. पिछले ग्यारह महिनों में घर से आने वाले हर पत्र को पढ़कर सोचती रही, मैंने क्या ग़लत कर दिया; जो आपके पास से आने वाला हर पत्र चाहे वह वीर जी का हो, आपका हो या चाचा-चाची का, या किसी और रिश्तेदार का, दबे-घुटे, पर्दे में ढके-छिपे मुझे कटघरे में खड़ा कर लिखा जाता रहा. मुझे इस बात का पता ही नहीं था कि कोई पत्र आपने मुझे लिखा है, जिसका उत्तर आप शीघ्र ही चाहते थे और मैंने उत्तर नहीं दिया. उसके परिणाम स्वरूप आपके प्रेम भरे पत्र मुझे मिल रहे थे.

मुझे इस देश में आये दस साल हुए हैं. इन दस सालों में कोई दिन ऐसा नहीं गया, जिस दिन मैंने आप लोगों को याद नहीं किया. पर मार्च १९९२ को लिखी बाऊ जी की चिट्ठी, जो मुझे अब मिली; उस पत्र को पढ़कर पहली बार महसूस हुआ, आप सबके दिल में मेरा सिर्फ़ इतना ही स्थान है कि मैं आपकी अपेक्षाएं पूरी करने के लिए बनी हूं. आप लोगों के जीवन और दिलों में मेरा और कोई महत्त्व नहीं, अस्तित्व नहीं. लड़कियां तो मेरे अलावा आपकी तीन और भी हैं, किस-किस से प्यार करें आप.

कई दिनों के ऊहापोह के बाद इस निर्णय पर पहुंची हूं कि अगर आज मैंने सच नहीं बोला, सही और स्पष्ट नहीं कहा तो अपने आपको कभी माफ़ नहीं कर पाऊंगी. पहली बार महसूस हुआ, मेरी सोच कितनी ग़लत रही इतने साल. शायद लड़कियां ऐसी ही होती हैं, भावुक, संवेदना से ओत-प्रोत.

*राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्वारा प्रवासी हिंदी सेवा सम्मान द्वारा सम्मानित सुधा ओम ढींगरा का 'नक्काशीदार केबिनेट' (उपन्यास), दस प्रतिनिधि कहानियां, सच कुछ और था, कमरा नंबर १०३, कौन-सी ज़मीन अपनी, वसूली, प्रतिनिधि कहानियां (कहानी संग्रह), सरकती परछाइयां, धूप से रूठी चांदनी, तलाश पहचान की, सफ़र यादों का (कविता संग्रह), वैश्विक रचनाकार: कुछ मूलभूत जिज्ञासाएं (साक्षात्कार संग्रह-दो भागों में), इतर (प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियां), सार्थक व्यंग्य का यात्री: प्रेम जनमेजय (संपादन सहयोग), मेरा दावा है (अमेरिकी शब्द-शिल्पियों का काव्य संकलन), गवेषणा (संपादन सहयोग), प्रवासी साहित्य: जोहान्सवर्ग के आगे (संपादन सहयोग) संपादित पुस्तकें, परिक्रमा (पंजाबी से अनुदित हिंदी उपन्यास), विमर्श-नक्काशीदार केबिनेट-पंकज सुबीर, शोध दृष्टि-सुधा ओम ढींगरा का साहित्य-बलबीर सिंह, प्रकाश चंद्र बैरवा, सुधा ओम ढींगरा : रचनात्मकता की दिशाएं-वंदना गुप्ता (आलोचना की पुस्तकें), डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में अभिव्यक्त और निहित समस्याएं - रेशू पांडेय और निधि भडाना, प्रवासी भारतीयों की समस्याएं एवं संवेदनाएं (सुधा ओम ढींगरा की कहानियों के संदर्भ में) प्रसीता पी, सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में प्रवासी जीवन-शहनाज (शोध पुस्तकें), और ओह कोई होर सी (पंजाबी में अनुदित), कई कहानियां अंग्रेज़ी में अनुदित, ६० संग्रहों में कविताएं, कहानियां, आलेख प्रकाशित, मां ने कहा था (काव्य सी.डी.) है. नॉर्थ कैरोलाइना, यू एस ए के यूएनसी चैपल, हिल और एनसी स्टेट विश्वविद्यालयों में कविताएं और कहानियां पढ़ायी जाती हैं. भारत के अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में कहानियां, कविताएं और आलेख प्रकाशित.*

**: संप्रति :**

*संरक्षक एवं प्रमुख संपादक विभोम-स्वर त्रैमासिक पत्रिका, संरक्षक एवं सलाहकार संपादक शिवना साहित्यिकी त्रैमासिक पत्रिका. ढींगरा फाउंडेशन (यूएसए) की उपाध्यक्ष और सचिव.*

सच से भागती, हर दिल में प्यार तलाशती. स्वार्थ, बेरुखी को भी प्यार समझ कर सीने से लगा कर रात-रात भर आंसू बहाती भावनात्मक बेवकूफ़.

आपके साथ पिंड (गांव) में रहते हुए अक्सर महसूस करती थी. हमारे घर में कुड़ियां आंगन के फूल नहीं बस एवईं पैदा हुई खरपतवार हैं. सारा प्यार, दुलार और सारी सुख-सुविधाएं तो वड्डे वीर जी और छोटे वीरे के लिए हैं. चाचा-चाची के अपना कोई बच्चा नहीं, दोनों वीर उनकी आंखों के भी तारे हैं. अब पिछले ग्यारह महीने की चिट्ठियों ने तो मेरे एहसास को और पुख़्ता कर दिया. आपके दिल में कुड़ियों का कोई महत्त्व है ही नहीं. आपके लिए वे कठपुतलियां हैं जैसे चाहो नचा लो. आपके घर में आपकी मर्ज़ी मुताबिक जियें और जब शादी हो जाये तो भी उनकी ज़िंदगी में आपका पूरा दख़ल और पूरा कंट्रोल रहे. तभी तो बाक़ी बहनों की अभी तक शादी नहीं हुई. पिंड में ये बातें छिपी थोड़े रहती हैं.

मुझे दोनों वीरों से कोई ईर्ष्या नहीं बस बीजी के भेदभाव से ऐतराज़ है और निराशा भी है; जिन्होंने हर बच्चे को नौ महीने अपने पेट में पाल कर, एक जैसा कष्ट सहा. पर बाहर आते ही शिशु लड़का-लड़की बन गया और भेदभाव का सिलसिला उसी क्षण से शुरू हो गया, जब बच्चे की आंख ही खुली.

बीजी, जैसे आप वीरों को सीने से लगाती हैं, कभी आपने अपनी धीयों (बेटियों) को भी सीने से लगाया. क्यों नहीं लगाया? हम तो आपकी ही हैं, आपकी जात की. बाऊ जी और चाचा जी ऐसा करें तो मैं मान सकती हूं, वे पुरुष हैं, वीर उनकी जात के हैं, पुरुष प्रवृत्ति ऐसी ही होती है. अफ़सोस तो इसी बात का है, स्त्री ही अपनी जात के साथ गद्दारी करती है. मैं जानती हूं यह पढ़कर आप सब अब मुझे बुरा-भला कहेंगे. दलजीत के शादी के बाद पर निकल आये हैं. अमरीका जाकर बदल गयी है, बेशर्म, बेहया, बदतमीज़ हो गयी है, मर्यादा भूल गयी है, बीजी-बाऊजी से कैसे बात करनी है, तमीज़ गंवा चुकी है.

नहीं जी, बात यह नहीं है. पिछले ग्यारह महीनों में आप मुझे इससे भी बड़े-बड़े पत्थर शब्दों में लपेट-लपेट कर मार चुके हैं. आप सबने यह सोचा कि मार्च १९९२ का लिखा पत्र जो अब फरवरी १९९३ को मिला है, मैंने नज़रअंदाज़ कर दिया. कब तक आप सबकी बातें सुनती रहूं और अब घर-बार वाली बन कर भी अपनी बात नहीं कह पाऊंगी तो अन्याय होगा, कुलदीप और कुलदीप के परिवार के साथ.

आपकी बेटी हूं, पूरा अधिकार है आपका. पर यह कैसा हक़ कि जिससे मेरी शादी हुई, जिस परिवार में मेरी शादी हुई, उनका मेरे पर कोई हक़ ही नहीं है. सिर्फ़ आपका है. आपने तो मेरी शादी कर दी है. आपके घर में मैं पराई थी. पराई अपने घर में आ गयी है. अब उस पराई पर यह कैसा हक़.

बीजी कुलदीप जी एक अच्छे इंसान हैं. वरना आज मेरी गृहस्थी टूट चुकी होती. आप लोगों ने मेरे यहां आने के एक महीने के भीतर ही छोटे वीरे के दाख़िले के लिए फ़ीस के साथ दस और चीज़ें लिखकर मोटी रक़म मांग ली. किसी ने यह जानने की कोशिश नहीं की, मैं कैसी हूं? मेरा जीवन यहां कैसा है? कुलदीप कैसा है? उसके परिवार वाले कैसे हैं? आपने तो दलजीत ब्याह दी, आप तो गंगा नहा लिये, वह जिये या मरे, आपकी मांगें पूरी करती रहे. कहां से पैसे भेजूं? क्या आपने मुझे पढ़ाया था कि मैं यहां आते ही कमाने लग जाती. मैं जितना भी पढ़ी हूं, आप सबसे लड़कर, अपने दम पर, सारे घर का काम करके, जो समय बचता, उसमें पढ़ी हूं. आप लोग तो लड़कियों को पढ़ाने के हक़ में नहीं थे. आप तो वीरों को ही पढ़ाना चाहते थे. यह बात अलग है कि वीर पढ़े नहीं और आपकी कुड़ियां सभी पढ़ने में तेज़ हैं.

आपके पत्रों से ही मुझे पता चला, आपने सोच-समझ कर मेरी शादी यहां की. कुलदीप का परिवार बहुत पहले यहां आ गया था. आप सबने सोचा बहुत पैसा है सेठी परिवार के पास, बस दलजीत जाते ही उनके घर में जो डॉलर उगते हैं, उन्हें उखाड़-उखाड़ कर भेजती रहेगी.

बाऊजी, जिसने यह रिश्ता करवाया, उसने आपके साथ धोखा किया है. यहां डॉलर उगते नहीं, कमाने पड़ते हैं, कड़ी मेहनत से. सेठी परिवार एक मेहनती परिवार है. उनके पास काला धन नहीं. एक-एक डॉलर पर टैक्स दिया हुआ है. अमीर-ग़रीब यहां सभी मेहनत करते हैं. अमीरों के पास भी ड्राइवर, नौकर-चाकर नहीं होते सभी अपना काम ख़ुद करते हैं. अमीर-ग़रीब का कोई भेद-भाव नहीं है यहां.

कुलदीप के बाऊजी और कुलदीप दोनों यहां टैक्सी चलाते हैं. कुलदीप के बीजी एक स्टोर में काम करते हैं,

जैसे अब मैं करने लगी हूं. कुलदीप की दो बहनें और दो भाई पढ़ रहे हैं. हां एक बात की ख़ुशी है मुझे और बड़े गर्व से कहूंगी, जो पिछले दस सालों से देख रही हूं, बड़ा संतोष वाला और सुलझा हुआ परिवार है. इस परिवार ने मुझे एहसास दिलवाया कि मैं सिर्फ़ एक स्त्री नहीं, इंसान भी हूं और मुझे भी सोचने का, कहने का हक़ है; जो आपके घर में मुझे कभी नहीं मिला. कुलदीप के बीजी मेरी सास कभी नहीं बनीं, एक अच्छी दोस्त की तरह मेरे साथ रहती हैं. शादी के एक महीने बाद जब आपने पैसे भेजने का लिखा था, मैं बहुत चिंतित हो गयी थी. कहां से पैसे लूं? किसको कहूं पैसे देने के लिए? परिवार को अभी मैं समझी भी नहीं थी. कुलदीप को भी पूरी तरह समझ नहीं पायी थी. पर आप में से किसी ने यह नहीं सोचा कि कुड़ी की नयी-नयी शादी हुई है, वह अभी अमरीका गयी ही है, कहां से हमारी मांग पूरी करेगी.

मैं जानती हूं, आप कहेंगे, वह चिट्ठी तो तुम्हारे छोटे वीर ने लिखी थी. अगर नहीं भेज सकती थी तो मत भेजती पैसे उसे. हमें अब क्यों कह रही है? बहन-भाई की बातों में हम नहीं बोलने वाले. वीर ने बताया तो होगा, आप उसे रोक सकते थे, समझा सकते थे. पर नहीं, आपने मेरी शादी अमरीका में इसलिए ही की है, ताकि सबका ख़्याल रखूं. यह अब स्पष्ट हो चुका है, उन पत्रों से जो आप लोगों की तरफ़ से ही लिखे गये हैं. हर पत्र में कुछ ऐसा ही लिखा गया है — 'फलां की बेटी ने बहन-भाइयों का जीवन संवार दिया. फलां की बेटी ने मां-बाप को घर बनवा दिया. फलां की बेटी ने ज़मीनें ख़रीद दीं.' रब्ब दी सोंह, आप सब 'फलां' के लिए, उन सभी लड़कियों के लिए सही कह रहे हैं, पर फलां-फलां की लड़कियों के ससुराल या परिवार नहीं होंगे, या उन पर कोई और ज़िम्मेदारी नहीं होगी. आपके जमाई जी और बेटी का बहुत बड़ा परिवार है. सारे ताए-चाचे-बुआ यहीं रहते हैं. हम पर परिवार की भी ज़िम्मेदारी है. आप की बेटी अकेली नहीं, जो कमाया सब अपने मायके भेजती रहूं. दस साल भेजा ही है. आप सबसे एक सवाल पूछना चाह रही हूं, बेटों के होते अगर बेटियां इतना करती हैं तो फिर उन्हें कमतर क्यों समझा जाता है?

एक महीना ही हुआ था मुझे इस देश में आये, वीरे की इच्छा पूरी करनी चाहती थी, सोचा था छोटा है, शादी के बाद पहली बार उसने मुझ से कुछ मांगा है. मैं बहुत

परेशान हो गयी थी. कुलदीप के बीजी मेरी परेशानी को ताड़ गये थे, उन्होंने मुझे पूछा और मैंने वीरे की चिट्ठी दिखा दी. वे पैसे उन्होंने ही मुझे दिये थे. दूसरी बार मैंने कुलदीप से लिये. तीसरी बार फिर बीजी से. तब तक मुझे पता चल गया, घर में कोई बात किसी से छुपी नहीं रहती.

कुलदीप और बीजी ने मुझे अपनी अंग्रेज़ी सुधारने की सलाह दी. मुझे अंग्रेज़ी बोलनी नहीं आती थी. मैं अपनी इस कमी को दूर करने के लिए एक स्कूल में जाने लगी; जहां अंग्रेज़ी दूसरी भाषा के रूप में सिखायी जाती है. क्रैश कोर्सेज़ होते हैं, अंग्रेज़ी भाषा में बोलचाल बहुत अच्छी तरह से सिखा दी जाती है, ताकि अमेरिका में रहना आसान हो जाये. बस यह कोर्स पूरा करते ही मुझे बीजी ने एक ग्रॉसरी स्टोर में लगवा दिया, जहां कुछ महीने काम सीखने के बाद मैं वॉलमार्ट के चैक आउट कॉउंटर पर आ गयी. तब से यहीं पर हूं. अब मैं यहां की इंचार्ज़ बन गयी हूं. मेहनती तो मैं शुरू से ही बहुत थी, और चीज़ें सीखने में भी तेज़ थी, यह बात अलग है कि वहां मुझे घर के कामों के अलावा कुछ और करने या सीखने नहीं दिया जाता था. आपका कहना था, हमें कौन सा बेटियों से नौकरी करवानी है. देखिए, अब मैं यहां नौकरी कर रही हूं पिछले दस सालों से. तभी तो आपकी तरफ़ से आयी हर मांग को पूरा कर पा रही हूं.

नौकरी दिलवाते समय बीजी ने कहा था, 'बेटी, नौकरी से जो कुछ मिलेगा वह तुम्हारा होगा. हमें तुम्हारा

एक पैसा नहीं चाहिए, अब तुम इसे अपने पर ख़र्च करो या अपने पेके (मायके) भेजो. कोई नहीं पूछेगा. अब तुम्हें मुझ से या कुलदीप से लेने की ज़रूरत नहीं.' कितना आत्मविश्वास भरा बीजी ने मेरे में.

ग्यारह महीनों से जो पत्र मुझे आ रहे थे, उन्हें पढ़कर मैं बहुत उदास रहने लगी थी. तीन छोटे बच्चे, नौकरी, घर-गृहस्थी के काम, फिर आपके शिकवे-शिकायतों से भरे पत्र. यह नहीं जान पायी थी कि मेरा कसूर क्या है? आपकी अपेक्षाओं पर लगातार खरा उतर रही थी. फिर कहां चूक हो गयी; आप सब लोग नाराज़गी भरे पत्र लिखने लगे. ग्यारह महीने बाद जो पत्र मुझे मिला, उससे सारी हक़ीकत स्पष्ट हुई.

मेरी ही भूल थी, कोई किसी की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर सकता; क्योंकि वे तो फैलती ही रहती हैं. कहां तक आप उन्हें संतुष्ट करेंगे. जब इच्छाओं का गजधर अपने फन फैलाने शुरू कर देता है तो उसकी पूर्ति होती रहे तो ठीक, नहीं तो वह ज़हर उगलने लगता है, मेरे साथ भी यही हुआ. पिछले ग्यारह महीनों से ज़हर ही पीती रही हूं.

कुलदीप के बीजी सही थे, गुड़िया होने के बाद उन्होंने एक दिन कहा था — 'दलजीत, अब तेरा अपना परिवार हो गया है. इस ओर भी ध्यान दे. बड़ी जल्दी ख़र्चे बढ़ जायेंगे. कुलदीप अकेला कितना संभालेगा. उसके अपने भाई-बहन भी हैं. मायके का कब तक पेट भरती रहेगी. जिस दिन हाथ खींचोगी, उसी दिन रिश्ता टूट जायेगा.'

मैं बीजी की ओर देखने लगी थी. वे मुस्कराते हुए बोले — 'ऐसे क्यों देख रही हो, अपने अनुभवों से कह रही हूं. मैं जब इस देश में आयी थी, मैं भी तुम्हारी तरह अपने परिवार को लेकर भावुक थी. ख़ूब पैसा भेजा उन्हें. जब अपनी ज़िम्मेदारियां बढ़ीं और मायके की डिमांड्स को पूरा नहीं कर पायी, बस रिश्ते टूट गये. बेटी, जिनको लेने का स्वाद पड़ जाता है, उनके लिए रिश्तों की कोई क़ीमत नहीं होती.'

मुझे याद है उन्होंने लंबी सांस लेकर कहा था — 'दलजीत, पंजाब के जिन गांवों से हम हैं, वहां बाहर से पैसा आना चाहिए. धी भेजे या जवाई, साडे मापियां नूं कोई फरक नहीं पैदा. पिंड विच उन्हां दी शान होनी चाहिदी. विदेशां विच कुड़ियां ओह ऐवईं नहीं भेज दे (दलजीत, पंजाब के जिन गांवों से हम हैं, वहां बाहर से पैसा आना चाहिए. बेटी भेजे या दामाद, हमारे मां-बाप को कोई फरक नहीं पड़ता. गांव में उनकी शान होनी चाहिए. विदेशों में लड़कियां वे ऐसे ही नहीं भेजते.

फिर वे रो पड़ी थीं — 'हम बेवकूफ़ लड़कियां रिश्तों को निभाती यहां मरती-खपती रहती हैं; जैसे रिश्ते निभाने की ज़िम्मेदारी हमारी है, किसी और की नहीं.'

बीजी की बात आपने सही कर दी. रिश्ते निभाने की ज़िम्मेदारी मेरी है. किसी और की नहीं. मेरे भी तीन बच्चे हैं, उनके प्रति आपकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं. किसी आते-जाते के हाथ ही कुछ भेज दें आप. पहले पांच साल मैं आ नहीं सकी, पक्का वीज़ा नहीं मिला था. पर आपने भी कभी मेरे या मेरे बच्चों के बारे में नहीं सोचा था. पांच साल बाद गांव लौटी थी. भरे सूटकेस लेकर आयी थी, और ख़ुद ही उन्हें भर कर वापिस लायी थी, आपका हाथ तंग था, आप कुछ दे नहीं पाये. तब मेरे दो लड़कियां थीं. उन बेचारियों की क्या वैल्यू थी? क्या उपहार मिलते उन्हें? पर उसके बाद तो मेरे बेटा हुआ. तब आपने क्या उपहार दिया? ये कैसी एकतरफ़ा ज़िम्मेदारियां हैं. पिंड से लोग अमेरिका आते हैं, सोचती हूं, मेरे पेके (मायके) वालों ने कुछ भेजा होगा. वे लोग आते हैं मिल कर चले जाते हैं. मेरे ससुराल वाले अच्छे हैं, कुछ कहते नहीं, वरना कितने ताने सुनने पड़ते, सोच कर ही डर जाती हूं.

ग्यारह महीने पहले के पत्र में आपने लिखा है, बड़े वीर जी को बिज़नेस में घाटा पड़ गया, बैंक से जो लोन लिया था वह उतार नहीं सकते. पच्चास लाख का लोन है. जल्दी से पच्चास लाख भेज दो. दस साल नौकरी करते हो गये हैं तुम्हें. इतना पैसा तो जोड़ लिया होगा और बाऊ जी आपने तो कमाल कर दिया; मेरे वेतन के डॉलरों को रुपयों में बदल कर पूरा हिसाब मुझे लिख दिया कि इतना पैसा तेरे पास होना चाहिए.

बाऊ जी आप यह भूल गये, हम यहां डॉलरों में कमाते हैं, डॉलरों में ख़र्च करते हैं, रुपयों में नहीं. मैं यहां किसी कंपनी की प्रेज़िडेंट नहीं लग गयी हूं, कि ढ़ेर सारा कमाती हूं. बस वॉलमार्ट स्टोर के चैक आउट कॉउंटर की इंचार्ज़ हूं. जितना भी कमाती हूं, सिर्फ़ आप लोगों के लिए ही नहीं, मेरा यहां परिवार भी है, उसके प्रति मेरा दायित्व पहले है. मेरे तीन बच्चे हैं, उनके ख़र्चे मैं ही संभालती हूं.

बाऊ जी, जब मैं आगे पढ़ना चाहती थी, तब आपने मुझे पढ़ाया नहीं यह कह कर कि हमें कौन–सा लड़कियों से काम कराना है, अब आप मेरी तनख़्वाह की पाई-पाई का हिसाब रख रहे हैं. मेरा यह रूप मेरे सुसराल की देन है, मेरी

तनख़्वाह उनकी है, पर उन्होंने कभी कुछ नहीं चाहा, कोई हिसाब नहीं रखा. पिछले दस सालों से जो कुछ मैंने आपको भेजा इसी वेतन से भेजा, वह सब भी हिसाब में लिखिए और गणना कीजिए, कितना पैसा बचा होगा.

ग्यारह महीने पहले के पत्र को पढ़कर मुझे सबसे अधिक दु:ख इस बात का है, आपने लिखा है, अगर तुम्हारे पास पैसा नहीं तो पिंड में कुलदीप के परिवार की ज़मीन है, उसमें वह अपना हिस्सा गिरवी रखकर पैसा ले दे; ज्योंही तुम्हारे वीरे का काम सेट होगा, हम छुड़ा लेंगे. आपके इस व्यवहार से मैं बेहद आहत हुई हूं, निराश हुई हूं, बेइंतिहा दु:ख हुआ है मुझे. यह बात मेरे ससुराल से छिपी नहीं रहेगी, वे क्या सोचेंगे आपके बारे में? मेरे ससुराल ने आपसे कोई दहेज नहीं लिया, बेहद सादगी से मेरी शादी हुई. उन्होंने आपके पैसे ख़र्च नहीं करवाए. मुझे कभी आपकी मदद करने से मना नहीं किया. वे आप ही के गांव, आप ही की बिरादरी से निकले सभ्य, सुसंस्कृत और शरीफ़ लोग हैं. रिश्तों की क़द्र करते हैं. मुझे कभी आपकी इच्छाएं पूरी करने से रोका नहीं. सादे लोग हैं, बेहद अच्छे, पर आप उनकी सादगी और अच्छाई का यह क्या सिला दे रहे हैं. उनकी पुश्तैनी ज़मीन को गिरवी रखवाने का सोच रहे हैं. वह परिवार की संयुक्त ज़मीन है. एक बात स्पष्ट कर दूं बाऊ जी, सब अलग-अलग घरों में रहते हुए भी मिलजुल कर रहते हैं. इस देश में आकर तो रिश्तों की असली पहचान हुई है, कैसे सब मिलजुल कर रहते हैं. यहां बड़ी-बड़ी बातों को चाय का कप पीते हुए सुलझा लिया जाता है, छोटी-छोटी बातों की ओर तो कोई ध्यान ही नहीं देता. देश में अपने घर में सालों पुरानी बातों की लकीर पीटते रहते हैं. पुरानी बातों को भुला कर आगे बढ़ने का नाम ही नहीं लेते.

जब मैं शादी होकर आयी थी, उसी दिन कुलदीप ने बता दिया था, वे पुरखों की ज़मीन में कोई हिस्सा नहीं चाहते. मैं बहुत ख़ुश हुई थी, एक खुद्दार आदमी से शादी हुई है और उन्होंने कहा था कि वे मां-बाप से भी कुछ लेना नहीं चाहते, हम अपनी ज़िंदगी में सब कुछ ख़ुद कमा कर बनाएंगे और बाऊ जी, बीजी हम वही कर रहे हैं.

आपने लिखा, आपने मुझे जन्म दिया, पढ़ाया-लिखाया और विदेश में शादी की ताकि मैं ऐश करूं तो ऐसे मां-बाप के लिए मैं पच्चास लाख नहीं भेज सकती और आगे आपने लिखा है अगर तेरे वीरे को जेल हुई तो पूरे ख़ानदान में कोई तुझे माफ़ नहीं करेगा, तुम्हें ही दोषी ठहराया जाएगा.

बाऊ जी-बीजी, आपने मुझे जन्म दिया, पाला-पोसा, इस काबिल बनाया कि विदेश में अपनी ससुराल में इज़्ज़त के साथ रह रही हूं. आभारी हूं आपकी और हर बच्चे पर अपने मां-बाप का यह कर्ज़ा होता है. हर मां-बाप सदियों से यह सब अपने बच्चों के लिए करते आ रहे हैं. मैं भी अपने बच्चों के लिए वही कर रही हूं और करती रहूंगी. पर मैंने सोच लिया है, मैं उन्हें दुनिया में लायी हूं, उनके लिए कुछ भी करना मेरा फ़र्ज़ है, उन पर कर्ज़ नहीं. कर्ज़ की इस तरह वसूली जो आप मेरे से कर रहे हैं, मैं अपने बच्चों से नहीं करूंगी... एक बात और कहना चाहती हूं, मुझे ख़ानदान दोषी क्यों ठहराएगा, बैंक से लोन लेते समय आपने मुझे पूछा था, क्या मैंने कोई गारंटी दी थी? पूरा ख़ानदान मिल कर कर्ज़ा नहीं उतार सकता, पर दूर दराज़ बैठी बेटी को दोषी ठहरा सकता है. आफ़रीन हूं ऐसे ख़ानदान पर. दस साल मैंने दिल खोल कर भरपूर आप सबको दिया, तब ख़ानदान के किसी बंदे ने मेरी पीठ नहीं ठोकी. आपने अपने दामाद और दोहते-दोहतिनों को कभी कुछ नहीं दिया, तब ख़ानदान ने आपको दोषी नहीं ठहराया. दोधारी सोच और दोहरी मानसिकता ऐसे ख़ानदान को मुबारक, जो अपने स्वार्थ और सहूलियत से बदलता है और नियम बनाता है.

बीजी आपने लिखा — 'मैंने ऐसे धी (बेटी) लेकर क्या करना, जो अपने धर्म के काम न आ सके.'

आपने यह कभी नहीं कहा, 'मैंने ऐसा बेटा लेकर क्या करना, जो बहन के काम न आ सके.'

मुझे याद है मैंने एक बार वड्डे वीरे से कुछ मांगा था तब आपने कहा था — 'दलजीत, तुम्हें जो चाहिए मुझ से मांग, उसे तंग मत कर, हम बैठे हैं अभी.' तो ठीक है बीजी आप अभी बैठे हैं, वड्डा वीरा आपसे मांगे, मुझे तंग मत करें.

अब आप मुझे कटघरे में खड़ा करके दोषी ठहराना चाहते हैं तो ठहरा लीजिए या अपने जीवन से निकाल देना चाहते हैं तो निकाल दीजिए. रब को शायद पता था तभी उसने मुझे इतना बढ़िया पति, बच्चे और ससुराल वाले दिये, ताकि जब आप अपने जीवन से मुझे निकालें तो कोई मुझे थाम ले.

आपकी नालायक कुड़ी,

दलजीत कौर.'

**101, Guymon Court, Morrisville,**
**NC-27560 USA**
**Mob. : 9198010672**
**Email : sudhadrishri@gmail.com**